खुले आकाश के नीचे

क्रम

एक निर्णय	09
चेहरे	19
परतें	23
टूट जाने के बाद	30
खुले आकाश के नीचे	37
ज़मी हुई बर्फ	44
काले अंधेरे की मौत	50
लहरों के बीच	56
ममी	62
ठहरा हुआ सबेरा	69
मुक्ति	75
सन्नाटे के आगे	83
नाले पार का आदमी	91

खुले आकाश के नीचे
सार्थक लेखन की तलाश

सार्थक लेखन के क्रम में ही नमिता सिंह के 'खुले आकाश के नीचे' संकलन की कहानियाँ आती हैं। नमिता सिंह कहानी लेखन के क्षेत्र में चलने वाले छद्मों को जानती हैं कि 'महिला कथाकारों से एक खास तरह की रचना की अपेक्षा की जाती है। व्यापक जन-जीवन से उन्हें उदासीन करने का शायद यह एक अच्छा तरीका है।' इसका अर्थ यह है कि नमिता सिंह लेखिका के रूप में अपने सामाजिक दायित्व से अच्छी तरह वाकिफ है तथा उनके लिये कहानी लेखन व्यापक जन-जीवन की समस्याओं के साथ दायित्वपूर्ण जिम्मेदारी निभाने की प्रक्रिया है।

'एक निर्णय', 'चेहरे', 'परतें', 'जमी हुई बर्फ', 'लहरों के बीच', 'खुले आकाश के नीचे' आदि ऐसी कहानियाँ हैं जिनका फलक स्त्री-पुरुष संबंधों तक सोमित है। 'एक निर्णय' की युवती एक ऐसे युवक से प्रेम में डूबकर उसके प्रति समर्पित हो जाती है, (यह जानते हुए भी कि वह आदमी अत्यंत टुच्चा है और मालती पहले ही उसके छल का शिकार हो चुकी है।) यह हुआ इसलिये कि राजनीतिक तथा सामाजिक दृष्टि से सजग होते हुए भी यह युवती प्रेम संबंधी मान्यताओं के स्तर पर परंपरावादी है, 'प्रेम क्या है केवल दे देना.... अपना सब कुछ दे देना.... संपूर्ण भाव से।' किंतु जैसे ही उसकी इस मान्यता को झटका लगता है ि और उसे स्त्री-पुरुष की बराबरी के साथ 'स्नेह की मधुरता और ईमानदारी' मिलने की संभावना मुकुल में दिखती है तो पुराने प्रेम संबंधों को तोड़ फेंकती है। 'चेहरे' कहानी नीलू के अकेलेपन के त्रास की कहानी है। नीलू बचपन से ही छात्रावास में अकेली रही एकाकी और खामोश। उसे पिता का प्यार नहीं मिला। छात्रावास में कमरे का अकेलापन ही उसकी नियति बन जाता है अन्य लड़कियों की तरह उससे मिलने उसका बॉयफ्रेंड नहीं आता। शादी के बाद भी उसके पति अतुल की व्यस्तता के कारण उसका अकेलापन बरकरार बना रहता है। यह अकेलापन उसे तिल-तिल काटता है। अकेलेपन के कारण उसकी मनःस्थिति इतनी असहज हो जाती है कि अतुल की प्रतिक्षा में व्याकुल नीलू के पास जब विनय आता है तो वह विनय के चेहरे में अतुल का चेहरा देखने लगती है। 'परतें' कहानी की नायिका भी अपने सारे संस्कारों को बरतरफ कर राजीव से शादी करती है और आम पत्नी की तरह वह भी राजीव का पूर्ण सान्निध्य चाहती है जो राजीव के लिए संभव नहीं है क्योंकि वह एक व्यस्त राजनीतिक कार्यकर्ता है। किंतु यहाँ नायिका आत्म-निर्वासन के गुंजलक में टूटती नहीं प्रत्युत राजीव के साथ ही सक्रिय होने का संकल्प करती है, 'ठहरो, मैं भी तुम्हारे साथ हूँ। कब तक तुम्हारी छाया पकड़ती रहूँगी।''

'लहरों की बीच' कहानी की सविता अपने पति तथा बच्चों से दूर विदेश में शोध कर रही है। उसके संस्कार परंपरागत भारतीय पतिव्रता स्त्री के हैं, अतः जब डैनियल की मित्रता को यह परिभाषित करने की चेष्टा करती है तो निषेध की लहरें उसे रोकती है किंतु वह इन लहरों को पार कर लेती है ''डैनी उसकी आवश्यकता भर तो है और यह कुछ समय की आवश्यकता कैसे उसके और उसके पति के संबंधों के बीच आ सकती है। वर्तमान तो केवल वर्तमान है, उसका सुख क्यों आगे-पीछे की कल्पना के काँटों से बाँधा जाए। जो अभी मिल रहा है, उसे जो कल न था, उस पर न्यौछावर करना क्या मूर्खता नहीं होगी।'' उसे लगा वह सुबोध के अब ज्यादा नजदीक है।' 'ममी' कहानी ऐसी महिला कलाकार की कहानी है जो पति और बच्चे के नाम पर अपनी कला की दुनिया से दूर चली जाती है जिसकी पीड़ा उसे बराबर सालती रहती है। वह बहुत तीखी कचोट के साथ अनुभव करती है, 'यह सुंदर सा घर, दो प्यारे बच्चे और उनके बीच वह

स्वयं सब कुछ मानो सजा हुआ म्युजियम हो, अक्षय का भरा पूरा म्युजियम।''

इस तरह की इन कहानियों में एक बात स्पष्ट रूप से गौर तलब है कि नमिता सिंह का स्वर बराबर परंपरागत तथा संस्कारगत रूढ़ियों के प्रति तल्ख है। 'जमी हुई बर्फ' कहानी भारतीय पारिवारिक जीवन की उन स्थितियों के खिलाफ बोलती है जो एक स्त्री को मात्र कुलवधू का दर्जा प्रदान कर उसके व्यक्तित्व को निर्जीव बना देती है। 'खुले आकाश के नीचे' का नायक महसूस करता है कि हमारे समाज में ज्यादातर बीनाएँ और राजेश शादी और वस्तुओं के सुखों की नियति से बँधकर ही प्रसन्न रहते हैं, पर ज़िंदगी के मसले इतने भर से नहीं सुलझते। इसलिये नायक सोचता है कि ''व्यक्तिगत स्तर पर लड़ाई ज्यादा नहीं करनी चाहिए। ज़िंदगी अपने आप में कितनी छोटा है। ये दूर तक फैला आकाश हर क्षण ज़िंदगी के हर लमहे को सार्थक बनाने का अहसास दिलाता है।''

यहीं से नमिता सिंह की कहानियों का दूसरा संसार शुरू हो जाता है जहाँ वे व्यक्तिगत पात्रों की दुनिया का अतिक्रमण करती हैं, लेखन के व्यापक सरोकारों से जुड़ती हैं। 'काले अंधेरे की मौत' कहानी का नायक ताजिन्दगी चमारों तथा निम्नवर्ग के लिये तथा सवर्णों के साथ उनके संघर्ष में ही अपने जीवन की सार्थकता खोजता रहता है। 'नालेपार का आदमी' ऐसी प्रगतिशीलता के समक्ष प्रश्नचिह्न लगाता है जो मूलतः पूंजीवादी है और उसकी सहानुभूति सर्वहारा वर्ग के साथ न होकर पूंजीवादी व्यवस्था के साथ ही होती है। अंततः ऐसे बुर्जुआ प्रगतिशील सर्वहारा चेतना को कुंठित ही करते हैं। किंतु यह कहानी घटनाओं की नाटकीयता के कारण फिल्मी ज्यादा लगने लगती है। 'मुक्ति' कहानी का राजे भी एक गरीब घायल के साथ धोखा करके अपने अपराध से मुक्ति पाता है। 'सन्नाटे से आगे' के विद्यानिवास को कभी वर्ग-संघर्ष के कारण ही नौकरी छोड़नी पड़ी थी किंतु धीरे-धीरे वे दुनियादार हो गये। एक रोज उनका पुराना साथी बलभद्र जो कभी उनके साथ ही यूनियन का कार्यकर्ता था, पुलिस से बचने के लिये उनसे शरण मांगता है। विद्यानिवास खुशी-खुशी बलभद्र को अंदर वाले कमरे में ठहरा देते हैं। किंतु उनके पुत्र को यह अच्छा नहीं लगता। पुत्र की बातें सुनकर बलभद्र चुपचाप वहाँ से चला जाता है। विद्यानिवास को अपने ऊपर खीझ होती है और वह पुनः यूनियन में सक्रिय होने का संकल्प लेते हैं।

यह जरूर है कि इन कहानियों में नाटकीयता खूब है फिर भी नमिता सिंह की ये कहानियाँ सार्थक लेखन के प्रश्नों को बखूबी रेखांकित करती हैं।

हेतु भारद्वाज

(नई कहानी-सितंबर, 1979)